इकाई 12 जनसांख्यिकी

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- यूरोप में 1750-1850 के बीच जनसांख्यिकी में परिवर्तनों को समझने के लिए उपलब्ध विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचित हो सकेंगे,
- इस जनसांख्यिकी के इतिहास के अध्ययन के लिए उपयोगी स्रोतों को पहचान सकेंगे,
- यह समझ सकेंगे कि जनन क्षमता, वैवाहिक प्रथा या मृत्यु दर जैसे परिवर्तनीय कारक किस प्रकार अलग-अलग समयों में अलग-अलग महत्व प्राप्त कर लेते हैं, और
- बता सकेंगे कि विभिन्न लेखकों ने किस प्रकार जनसंख्या और आर्थिक उन्नति के बीच अलग-अलग ढंग से संबंध स्थापित किया है।

12.1 प्रस्तावना

इस इकाई में 1750 के आरंभ से दो शताब्दियों तक यूरोप की जनसांख्यिकी पर विचार किया जा रहा है। इस युग में यूरोप में जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई। इस इकाई में जनसंख्या वृद्धि की परिवर्तनीय दरों, इसके निर्धारक तत्वों और सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों से इसके संबंध पर विचार कर सकेंगे, मूलत: जन्म, मृत्यु और देशांतरण के कारण एक समयावधि में जनसंख्या में परिवर्तन होता है। जनन क्षमता और मृत्यु दर में परिवर्तन स्वयं परस्पर संबद्ध जनसांख्यिकी और गैर-जनसांख्यिकी परिघटना के परिणाम होते हैं। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यूरोप के अलग-अलग क्षेत्रों में और अलग-अलग समय में जनसंख्या परिवर्तन के निर्धारक तत्व और तरीके बदलते रहते हैं।

12.2 विभिन्न दृष्टिकोण

1970 के मध्य तक जनसांख्यिकी संक्रमण सिद्धांत पर आधारित दृष्टिकोण जनसांख्यिकी के क्षेत्र में प्रमुख दृष्टिकोण था। इसमें थोड़े विवरण और थोड़े सिद्धांत से युक्त त्रिपक्षीय संक्रमण की बात की गयी है। उच्च जनन क्षमता और उच्च मृत्यु दर के परिणामस्वरूप संक्रमण से पहले के चरण में जनसंख्या वृद्धि की दर कम रही; संक्रमणकाल के दौरान मृत्यु दर में कमी आने और जनन दर स्थिर रहने से या उसमें गिरावट न आने से जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई; और तीसरे चरण में या तो वृद्धि नहीं हुई या कम हुई। यह क्लासिकल संक्रमण सिद्धांत आधुनिकीकरण सिद्धांत का ही एक रूप है। इसमें बताया गया है कि औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण आदिम समाज से विकसित समाजों की ओर एक रेखीय विकास नहीं होता है।

पहले पच्चीस वर्षों में ऐतिहासिक जनसांख्यिकी की शोध विधियों में काफी विकास हुआ है। शक्तिशाली कम्प्यूटरों की बढ़ती उपलब्धता के कारण बड़े और जटिल आंकड़ों का आकलन भी आसान हो गया और इसकी सहायता से समय-समय पर होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करना संभव हो सका। इसके अलावा माल्थस के 'सकारात्मक नियंत्रण' के सिद्धांतों और जलवायु तथा बीमारी जैसे बाहरी कारणों पर बल दिए जाने के बजाए ऐतिहासिक जनसांख्यिकी में 'निरोधक नियंत्रण' पर बल दिया गया जिसके तहत सामाजिक, सांस्कृतिक और संस्थागत कारकों पर विचार किया गया। रिंगले और शोफिल्ड की पुस्तक 'पोपुलेशन हिस्ट्री ऑफ इंग्लैंड' से 16वीं और 19वीं शताब्दी के बीच नई दिशा और परिवर्तन का संकेत मिलता है।

14वीं शताब्दी के मध्य के बाद काली मौत के युग के पश्चात यह बहस शुरू हो गई कि जनसंख्या वृद्धि में कमी के लिए विवाह में कमी उत्तरदायी है या उच्च मृत्यु दर। 1500 और 1900 के बीच लगभग सभी लोगों का यही मानना था कि वैवाहिक व्यवस्था में बदलाव आने से इंग्लैंड में दीर्घावधि में जनसंख्या की वृद्धि पर प्रभाव पड़ा और यहां यूरोप से अलग जनसांख्यिकी प्रवृत्ति देखने को मिलती है। एन्सले कोल ने प्रिंसटन विश्वविद्यालय में यूरोपीय जनन क्षमता पर दो दशकों तक काम किया और संक्रमण सिद्धांत की तुलना ऐतिहासिक सिद्धांत के साथ करने के लिए 700 प्रांत-स्तरीय इकाइयों से आंकड़ा इकट्ठा किया। इस सर्वेक्षण के परिणाम से क्लासिकल संक्रमण नमूने की कमियां सामने आई: जनन क्षमता में आई गिरावट और सामाजिक तथा आर्थिक विकास के लिए किए गए उपायों में कोई सुसंगत संबंध नहीं दिखाई पड़ा। इन परिणामों से यह बात सामने आई कि जनन क्षमता का सीधा संबंध 'संस्कृति' से होता है जो भाषा, जातीयता या भौगोलिक क्षेत्र के रूप में व्यावहारिक रूप से परिभाषित की जाती है। विवाह की उम्र में अंतर और अविवाहित रहने की प्रथा से जनसंख्या की 'प्राकृतिक जनन क्षमता' में अंतर आता है। इस शोध के सभी परिणाम हमें इस निष्कर्ष पर पहुंचाते हैं कि पूरे यूरोप के लिए एकमात्र जनसांख्यिकी व्यवस्था की परिकल्पना मुश्किल है। इसके अलावा प्रत्येक देश और क्षेत्र की जनसंख्या का इतिहास वहां की विशिष्ट आर्थिक, संस्थागत और सांस्कृतिक इतिहासों से गहराई से जुड़ा होता है।

12.3 प्रमुख स्रोत

नौर्डिक (स्कैन्डिनेविया) देशों को छोड़कर 19वीं शताब्दी के आरंभ में यूरोप में नियमित, भरोसेमंद और केंद्रीकृत रूप में व्यवस्थित जनगणना की शुरुआत हुई। इंग्लैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स में 1807 में, आयरलैंड में 1821 में नियमित जनगणना और 1816 में फ्रांस में पंचवर्षीय गणना शुरू हुई। इसके पहले फ्रांस में 1690 के दशक में सरकारी स्तर पर जनगणना की गई थी और 1801 ओर 1806 में अनुमानित संग्रह किया गया। नेपोलियन के आक्रमणों के फलस्वरूप बेल्जियम, निदरलैंड और हेल्वेटिक गणतंत्र तथा कुछ जर्मन राज्यों में राष्ट्रीय जनगणना का आयोजन किया गया। इसके बाद बेल्जियम में 1829 से, निदरलैंड में 1839 से, स्वीटजरलैंड में 1850 से नियमित जनगणना शुरू हुई और 1852 में पूरी जर्मनी में जनगणना की गई। ये आरंभिक जनगणनाएं अधूरी थीं और इनमें एक समान गणना नहीं की गई।

इनमें सबसे पहले प्रमुख घटनाओं को दर्ज किया गया। चर्च ने उत्तर मध्य काल में प्रत्येक बपतिस्मा को दर्ज करना शुरू कर दिया और इसके बाद विवाहों और मृतकों का भी आंकड़ा रखा जाने लगा। 1750 तक पश्चिमी यूरोप के अधिकांश देशों में चर्च द्वारा जन्म और मृत्यु का रजिस्टर रखा जाने लगा। फ्रांस में 1579

से लगातार जन्म मृत्यु रजिस्टर पाया जाता है और नॉर्डिक देशों में 1730 के दशक से इस प्रथा की शुरुआत पाई जाती है। फ्रांस में पहली बार 1792 में चर्च से अलग जन्म मृत्यु पंजीकरण की प्रथा की शुरुआत हुई। इस प्रकार की सूचना प्राप्त करने के तरीके अलग-अलग थे और उनका विवरण भी अलग-अलग ढंग से लिया जाता था। उदाहरण के लिए 19वीं शताब्दी के आरंभ में असादृश्य, विलंबित बपतिस्मा और पंजीकरण न कराने से ऐंग्लिकन रजिस्टर में कुल जन्म और मृत्यु के 75 प्रतिशत से कम का ही अभिलेखन हो पाता था। इन कमियों के बावजूद इस सूचना से पारिवारिक पुनर्गठन के जरिए जनसांख्यिकी इतिहास का पुनर्निर्माण किया जा सका। फ्रांस और स्कैन्डिवियन देशों की अपेक्षा इंग्लैंड, वेल्स और नीदरलैंड में अभिलेखन की सम्बद्धता से ज्यादा समस्याएं सामने आईं। परिवार पुनर्गठन से नवजात शिशु और बच्चों की मृत्यु दर के संबंध में तो पर्याप्त सूचना मिली परंतु वयस्क मृत्यु दर का आकलन करने और जनसंख्या आकार का निर्धारण करने में इसका कम उपयोग हो सका। परिवार पुनर्गठन से प्राप्त जनसांख्यिकी आकलन में केवल परिवार में 'टिकने वालों' की ही गणना की जाती थी और ये अपेक्षाकृत थोड़े 'पूर्ण परिवार' पर ही आधारित था। इस प्रकार के आधे अधूरे और अपर्याप्त प्रमाणों के आधारों पर सामान्यीकरण करने से गलत निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं; रिंगले के कोलिटोन के परिवार पुनर्गठन में परिवार सीमा का उल्लेख किया गया था परंतु जब पहले रजिस्टर में दर्ज पहले 13 और बाद में 26 चर्चों के रजिस्टरों पर विचार किया गया और आंकड़ा आधार विस्तृत किया गया तो परिवार सीमा का कोई प्रमाण नहीं पाया गया। पुनर्गठन अभ्यासों के गुणन से जनसंख्या आकार के आकलन में मदद नहीं मिलती है। इससे जन्म, मृत्यु और प्रजनन दरों का कुल योग प्राप्त करने में मदद मिलती है। इस समस्या के समाधान के लिए कैम्ब्रिज ग्रुप ने जनगणना काल को पूर्व-सांख्यिकी काल से जोड़ने के लिए 'पिछले आंकड़े' को आधार बनाया। इस तकनीक के आधार पर 1451 से 1751 तक इंग्लैंड की जनसंख्या का पंचवर्षीय आकलन किया जा सका।

बीसवीं शताब्दी की जनसांख्यिकी में विश्वसनीयता और स्रोत सामग्री के आकार में तेजी से सुधार हुआ। सांख्यिकी आंकड़े के अलावा हमें राज्य नीतियों और जनसंख्या संबंधी बहसों के बारे में भी काफी सूचना मिलती है।

इस इकाई में यूरोप के जनसांख्यिकी इतिहास को हमने दो कालों में विभाजित किया है -- पहले काल में 1750 से लेकर 19वीं शताब्दी के अंत तक की चर्चा की गई है। दूसरे काल में शताब्दी की शुरुआत से लेकर 1870 दशक तक का जिक्र किया गया है। यह माना जाता है कि 1870 के दशक के आस पास यूरोप के अधिकांश देशों में जनन क्षमता में लगातार कमी आई। इसीलिए इसे विभाजन का आधार बनाया गया है।

12.4 1750 से 1850 तक जनसंख्या प्रवृत्ति

पश्चिमी यूरोप के जनसांख्यिकी इतिहास में सोलहवीं शताब्दी से जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हुई। 12वीं, 13वीं और 15वीं शताब्दियों में जनसंख्या वृद्धि की दर समान रही परंतु 1750 से लेकर 1850 तक कोई उल्लेखनीय और दूरगामी जनसांख्यिकी संकट पैदा नहीं हुआ। 1750 में जनसंख्या 600 से 640 लाख थी जो 1850 में बढ़कर 1160 लाख हो गई। परंतु यह वृद्धि पूरे महाद्वीप में एक समान नहीं थी।

1750 **(लगभग)** 1850 **(लगभग) में आकलित जनसंख्या (लाखों में)**

देश	लगभग 1750	लगभग 1800	लगभग 1850
नौर्वे	[7]	9	1.4
स्वीडेन	18	23	35
फिनलैंड	5	10	16
डेनमार्क	[7]	9	14
आइसलैंड	0	0	1
जर्मनी	[184]	(245)	(350)
निदरलैंड	[19]	(21)	31
बेल्जियम	[22]	[28]	(44)

स्वीटजरलैंड	14	17	24
फ्रांस	245	290	359
स्कॉटलैंड	13	16	29
वेल्स	[3]	06	12
इंग्लैंड	58	87	167
आयरलैंड	24	[52]	67
कुल	619	813	1163

[] :दीर्घावधि अज्ञात स्रोतों पर आधारित, 'लगभग'

(): दो संतुलित आंकड़ों के बीच के ज्ञात स्रोतों पर आधारित 'लगभग' आकलन

जर्मनी का आंकड़ा 1914 की सीमा पर आधारित है जिसमें अलसास और लौरेन शामिल नहीं था। 1750 और 1850 के बीच यूरोप में जनसंख्या वृद्धि 0.5 प्रतिशत प्रतिवर्ष की धीमी गति से हुई। नेपोलियन युद्ध के वर्षों में यूरोप की जनसंख्या वृद्धि को प्रमुख रूप से धक्का लगा । रूस के साथ हुए युद्धों के परिणामस्वरूप स्वीडेन, फिनलैंड और नौर्वे में महामारी और भूखमरी से 1860 से 1810 के बीच जनसंख्या में तेजी से गिरावट आई और लगभग एक दशक तक कोई वृद्धि नहीं हुई। केवल ब्रिटेन इससे अछूता रहा और यहां एक प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से मध्यम विकास होता रहा। युद्ध का अंत होते ही जनसंख्या वृद्धि में तेजी आई। 1820 तक यह वृद्धि एक प्रतिशत तक पहुंच गई या इसे पार कर गई। इसके बाद वृद्धि में फिर कमी आई। 1830 के दशक में केवल जर्मनी, इंग्लैंड, नौर्वे, और स्कॉटलैंड ही एक प्रतिशत वृद्धि दर को छू सके। आयरलैंड, फिनलैंड और फ्रांस में 0.5 प्रतिशत से भी कम वृद्धि दर दर्ज की गई। 1840 के दशक में छोटे देशों में थोड़ी सी तेजी आई। इंग्लैंड और जर्मनी में वृद्धि दर में कमी आई। फ्रांस में वृद्धि दर कम यानी 0.5 प्रतिशत रही। आयरलैंड में जनसंख्या में कमी आई। आलू अकाल के कारण बड़ी संख्या में लोगों की मृत्यु हुई और लोग घर-बार छोड़कर भाग गए।

देशों के भीतर भी जनसंख्या परिवर्तन के स्वरूप में अंतर था। इंग्लैंड में दक्षिण-पूर्व और उत्तर के औद्योगिक क्षेत्रों में देश के बाकी क्षेत्रों की अपेक्षा तीव्र विकास हुआ था। स्वीटजरलैंड के अल्पाइन क्षेत्रों में वृद्धि काफी धीमी थी। जर्मनी में जनसंख्या वृद्धि दर पूर्व के खेतिहर इलाके में ज्यादा, पश्चिम के औद्योगिक क्षेत्र में मध्यम और दक्षिण क्षेत्र में सबसे कम थी।

12.4.1 देशांतरण

शहरी जनसंख्या की तीव्र वृद्धि में आन्तरिक देशांतरण की प्रमुख भूमिका थी जहां मृत्यु दर जन्म दर से ज्यादा थी। 1750–1850 अवधि में बाह्य देशांतरण जनसांख्यिकी की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण नहीं था। यूरोप में प्रथम विश्व युद्ध होने के पूर्व के पचास वर्षों में यूरोप से लगभग 200 लाख लोग दुनिया के दूसरे क्षेत्रों में चले गए। 1816-17 और 1847 के आलू खेती की असफलता के कारण जर्मनी और स्वीटजरलैंड में देशांतरण हुआ। 1840 के दशक में जर्मनी की कुल जनसंख्या 300 लाख थी जिसमें से 300,000 जर्मन देश से बाहर चले गए। आयरलैंड से इस अवधि में सर्वाधिक लोग देशांतरित हो गए। 1845-48 के अकाल के बाद कुल जनसंख्या (1841 में) का 1/8वां भाग देश छोड़कर बाहर चला गया। अधिकांश अन्य क्षेत्रों में यह प्राकृतिक वृद्धि या कमी की दर थी अर्थात जन्म और मृत्यु के बीच के अंतर से ही जनसंख्या में मुख्य रूप से परिवर्तन होता रहा था।

12.5 जनन क्षमता और विवाह प्रथा

यूरोप में जनसांख्यिकी परिवर्तन के लिए जन्म दर में आए परिवर्तन को मुख्य रूप से जिम्मेदार माना गया। जारजता, जनन शक्ति और वैवाहिक पद्धति में आए संयोजनात्मक परिवर्तन से जन्म दर को समझने में मदद मिली। जन्म दर में संयोजनात्मक प्रभावों का असर तब होता है जब जनन क्षमता की आयु वाले महिला

समूहों में तेजी से परिवर्तन आता है। नौर्वे के चक्रीय परिवर्तनों में जन्म दर में संयोजनात्मक प्रभावों का योगदान महत्वपूर्ण था।

1750 और 1790 के बीच लगभग सभी जगह जारज और अवैध सन्तानों के अनुपात में वृद्धि हुई। हालांकि विवाहपूर्व और विवाहेतर गर्भावस्था की दरों में होने वाले परिवर्तन से उस काल में जनसंख्या वृद्धि में होने वाले परिवर्तन का कोई खास पता नहीं चलता है। इंग्लैंड में 1750, 1800 और 1850 में क्रमश: 3, 5 और 6.5 प्रतिशत सन्तानें अवैध थीं। जन्म दर में केवल 10% वृद्धि के लिए अवैध संतानोत्पत्ति को उत्तरदायी माना जा सकता है। 1750 और 1820 के दशक के बीच फ्रांस में अवैध बच्चों की संख्या चौगुनी बढ़ी फिर भी कुल वैध जन्में बच्चों में से 1/8 हिस्सा ही था।

अधिकांश क्षेत्रों में कुल वैवाहिक जनन क्षमता अनुपात 8 और 9.5 के बीच था परंतु इंग्लैंड और स्वीडेन में यह कम था। वैवाहिक जनन क्षमता से इंग्लैंड में कम आंतरिक परिवर्तन की सूचना मिलती है जबकि फ्रांस में यह काफी विषम रहा। 1600 और 1800 के बीच इंग्लैंड की वैवाहिक जनन क्षमता स्थिर रही। हालांकि फ्रांस में आरंभ में इसमें गिरावट आई परंतु 1820 के बाद पूरे देश में सभी जगह छोटे परिवार ही थे।

जनन क्षमता के स्तर का निर्धारण जनन शक्ति और उसके उपयोग पर निर्भर करता है। इस अवधि में महिलाओं की जनन शक्ति में कोई खास उतार चढ़ाव नहीं आया। स्वास्थ्य और पोषण में सुधार होने से जनन शक्ति में वृद्धि हुई। स्कैन्डिनेविया के कुछ हिस्सों में गुप्त रोग, मलेरिया और चेचक होने से जनन शक्ति में कमी आई। इस बात का कोई ठोस प्रमाण नहीं है कि इन वर्षों में जनता के पोषणात्मक स्तर में वृद्धि हुई थी। हालांकि खाद्यान्न आपूर्ति में उतार-चढ़ाव कम हुआ था।

ऐसा लगता है कि स्तन पान से भी जनन क्षमता पर प्रभाव पड़ा। जर्मनी के गांव पर किए गए शोध में देखा गया है कि जहां स्तन पान कम देर के लिए कराया जाता है वहां जन्म दर ज्यादा है। फ्रांस के शहरी क्षेत्रों में जहां स्तन पान कम अवधि के लिए कराया जाता था वहां वैवाहिक जनन क्षमता की दर ऊंची थी। फ्रांस के शहरी क्षेत्रों में जहां बच्चों को पालने के लिए धायों का उपयोग किया जाता था और मां अपने बच्चे को दूध कम समय के लिए पिलाती थी वहां जनन क्षमता ज्यादा थी। नवजात शिशु की मृत्यु दर से भी जनन क्षमता पर प्रभाव पड़ता था। फ्रांस में उच्च जनन क्षमता और निम्न जनन क्षमता क्षेत्रों के शिशु मृत्यु दर में 50 प्रतिशत का अंतर था।

1700 के बाद जेनेवा के बुर्जुआ वर्ग, फ्रांसीसी संभ्रांत वर्ग और फ्रांस के कुछ ग्रामीण इलाकों में जनन क्षमता को कम करने के सायास प्रयत्न किए गए। 1789 के बाद इस प्रकार के नियंत्रण में वृद्धि हुई। इंग्लैंड में रिंगले द्वारा कॉलिटेन के अध्ययन से यह बात सामने आई कि जनन क्षमता का स्तर कम होने का कारण ये नियंत्रण नहीं थे। हालांकि स्वीडेन, जर्मनी आदि में नियंत्रण के प्रारंभिक प्रमाण मिलते हैं लेकिन इसके सतत प्रयास के कोई प्रमाण नहीं मिलते हैं। अठारहवीं शताब्दी के अंत में जहां फ्रांस में वैवाहिक जनन क्षमता में कमी आई थी वहीं यूरोप के अन्य देशों में जनसंख्या की वृद्धि 'प्राकृतिक जनन' क्षमता के अनुसार हो रही थी। यहां यह बता देना आवश्यक प्रतीत होता है कि आरंभिक धारणा यूरोपीय जनन क्षमता परियोजना पर आधारित थी जिसमें सायास जनन क्षमता नियंत्रण की उपस्थिति या अनुपस्थिति के आधार पर आधुनिक या पूर्व आधुनिक जनसांख्यिकी प्रणाली व्यवस्थाओं के बीच अन्तर स्पष्ट किया जाता था। बाद में इसे संशोधित किया गया। यूरोपीय जनन क्षमता परियोजना ने सायास जनन क्षमता नियंत्रण की तुलना समतुल्य विशिष्ट नियंत्रण से की थी। अब यह स्पष्ट है कि बच्चे पैदा करने पर तो रोक नहीं लगी परंतु बच्चों के पैदा होने के बीच के अंतर से यूरोपीय वैवाहिक जनन क्षमता पर प्रभाव पड़ा।

12.6 विवाह व्यवस्था में परिवर्तन

हाल ही में किए गए अनुसंधानों से यह पता चलता है कि जब गर्भ निरोधक उपायों का उपयोग नहीं किया जाता था तब विवाहितों की संख्या और विवाहितों की उम्र का निर्धारण करके जनन क्षमता में कमी लाई जाती थी। सबसे पहले हैजनेल ने इस बात पर गौर किया था कि यूरोपीय विवाह पद्धति की विशिष्टता के कारण जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण स्थापित रहता है। उसने यह बताया कि ट्रिस्टे से लेकर लेनिनग्राद तक पश्चिम क्षेत्र में विवाहित महिलाओं का अनुपात (15 से 50 वर्ष की उम्र में 45 से 50 प्रतिशत महिलाएं) पूर्वी प्रदेश

(60 से 70 प्रतिशत) से काफी कम था। उसके अनुसार यूरोप में 19वीं शताब्दी के अंत में विलम्ब से शादी होने लगी और अपेक्षाकृत अधिक महिलाएं अविवाहित रहने लगीं (यह गौर करने की बात है कि 10 से 20 प्रतिशत महिलाएं अपने जनन क्षमता उम्र में शादी नहीं करती थीं)। हालांकि हरेक सामाजिक समूह में इस दृष्टि से विभिन्नता पाई जाती थी। नौर्डिक देशों में निम्न वर्ग के पुरुष वृद्ध महिलाओं से शादी करते थे। इस प्रथा का चलन परिवार के आकार को नियंत्रित करने और छोटा करने की दृष्टि से किया जाता था। रिंगले और शोफिल्ड ने इंग्लैंड में रहने वाले लोगों की जनन क्षमता में होने वाले परिवर्तन के लिए प्रथम विवाह की उम्र और विवाह करने वालों के अनुपात की भूमिका महत्वपूर्ण मानी है। 80 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि के लिए यही दो कारक विशेष रूप से जिम्मेदार थे। आयरलैंड में कम उम्र में शादी कर देने से जनन क्षमता दर काफी ऊंची थी। फ्रांस में 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विवाह की उम्र बढ़ी और 19वीं शताब्दी के आरंभ में विवाह की उम्र घटी। विवाह की उम्र में कमी आने से जनन क्षमता में वृद्धि हुई। परंतु विवाह के बाद परिवार नियंत्रण के प्रथा के कारण संतुलन बना रहा।

12.7 मृत्यु दर

यूरोपीय ऐतिहासिक जनसांख्यिकी पर हाल में हुए अनुसंधान ने यूरोप में जनसंख्या परिवर्तन के लिए मृत्यु दर को प्रमुख कारक नहीं माना है। फ्लिन जैसे आरंभिक लेखकों ने मृत्यु दर का उल्लेख संकट के रूप में किया है। इस संकट की विकटता और बारंबारता में आई कमी को मृत्यु दर में आई कमी का कारण भी बताया गया है। 1700 से पहले महामारी से काफी मौतें हुआ करती थीं। 1720 में प्लेग उन्मूलन के बावजूद चेचक, पेचिश, टाइफस (एक प्रकार का बुखार), खसरा और इनफ्लूएंजा जैसी स्थानीय महामारियों का प्रकोप बना रहा। परंतु आधुनिक युग के आरंभ में इन बीमारियों का उतना प्रकोप नहीं था जितना युद्ध और आकाल से भारी तबाही मचती थी। दोनों के दामन में महामारी छिपी होती थी। 1700-21 के उत्तरी युद्ध के साथ जो बीमारी और अव्यवस्था फैली उससे स्वीडेन की 20 प्रतिशत जनसंख्या मौत के मुंह में चली गई। फ्रांस में 1693-94 के संकट के दौरान बीस लाख लोगों की और 1709-10 के दौरान दस लाख लोगों की मौत हुई।

19वीं शताब्दी के आरंभ में मृत्यु दर पर इस प्रकार के संकटों का प्रभाव पड़ना कम हो गया। अब यह पृष्ठभूमि में चला गया और इस कारण मृत्यु दर में कमी आई। इस काल में नवजात शिशु और बच्चों की मृत्यु दर में कमी आने से प्रमुखतः मृत्यु दर कम हुई। 1760-69 और 1820-39 के बीच दस वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर में कमी आने से फ्रांस में लोगों की आयु बढ़ने की दर में लगभग 80 % की वृद्धि देखने को मिलती है। यूरोप के अभिजात वर्ग की मृत्यु दर में तेजी से सुधार हुआ। चेचक से होने वाली मौतों में तेजी से कमी आई परंतु यह स्पष्ट नहीं है कि यह इस बीमारी के कमी से हुआ या इस बीमारी से अब कम लोग मरने लगे। हालांकि चारों ओर मृत्यु दर में कमी आ रही थी परंतु नवजात शिशुओं की मृत्यु दर में भारी कमी आई। वयस्कों की मृत्यु दर में कमी बाद में आई। बच्चों की ज्यादातर मौत चेचक से होती थी जिसमें कमी आई। परंतु फेफड़े में होने वाली टी.बी में बढ़ोत्तरी हुई। इंग्लैंड और फ्रांस में मृत्यु दर संकट में कमी आई परंतु अपेक्षाकृत कम और स्थानीय संकट बना रहा।

यूरोप की जनसांख्यिकी में होने वाले परिवर्तन पर विचार करने वाले अधिकांश लेखकों ने चिकित्सा, शिक्षा, अस्पताल, चिकित्सा सुविधाओं में हुए सुधार, चिकित्सकों की संख्या में वृद्धि, निरोधक दवाओं (जैसे चेचक का टीका), शहरों के सुधार और व्यक्तिगत सफाई को मृत्यु दर में आई कमी का कारण बताया है। 1950 और 60 के दशक में थॉमस, मैकोन ने इन चिकित्सा संबंधी व्याख्याओं को नकार दिया। उनके अनुसार 1850 तक मृत्यु दर घटाने में चिकित्सक बहुत कम सफल हो सके थे और 19वीं शताब्दी में अस्पताल संक्रमण से भरे हुए थे। मृत्यु दर में आई कमी का सबसे बड़ा कारण हवा के जरिए होने वाले संक्रमणों से होने वाली मौतों में आई कमी थी। इसी प्रकार बहुत कम लोगों को चेचक का टीका दिया जाता था। उसने बताया कि आधुनिक आर्थिक वृद्धि के परिणामस्वरूप लोगों के जीवन स्तर में हुए सुधार ने मृत्यु दर में कमी लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। मैकोन के इस सिद्धांत की काफी आलोचना हुई। सबसे पहले उनकी इस धारणा को नकारा गया कि मृत्यु दर में आए सुधारों के कारण यूरोप की जनसंख्या में वृद्धि हुई थी। दूसरे जीवन स्तर में सुधार और मृत्यु दर के बीच के संबंध को भी नकारा गया। रिंगले और शोफिल्ड ने इंग्लैंड पर किए

अपने काम से इसे गलत सिद्ध किया। मजदूरी में हुए परिवर्तन और मृत्यु दर में हुए परिवर्तन के बीच उन्होंने कोई संबंध नहीं पाया।

बोध प्रश्न 1

1) 'जनसांख्यिकी संक्रमण सिद्धांत' से आप क्या समझते हैं ?

....

....

....

....

....

2) यूरोप में जनसांख्यिकी के इतिहासकारों ने जनसांख्यिकी इतिहास लिखने के लिए किन स्रोतों का इस्तेमाल किया ?

....

....

....

....

....

3) 19वीं शताब्दी के आरंभ में इंग्लैंड में आए जनन क्षमता परिवर्तनों का उल्लेख करते हुए रिंगले और शोफिल्ड ने किन दो परिवर्तनशील कारकों पर बल दिया था?

....

....

....

....

....

4) क्या थॉमस मैकोन यूरोप में मृत्यु दर की कमी के लिए चिकित्सकों और अस्पताल को जिम्मेदार मानते हैं अगर नहीं तो क्यों ?

....

....

....

....

....

12.8 जनसंख्या और संसाधन I

हम यह जान चुके हैं कि जनन क्षमता में बढ़ोत्तरी में प्रथम विवाह की उम्र और विवाहित जनसंख्या प्रमुख निर्धारक तत्व होते हैं। आइए, अब यह देखने की कोशिश करें कि आरंभिक आधुनिक यूरोप की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था से इनका क्या संबंध था।

सबसे पहले माल्थस ने विस्तार से जनसंख्या और संसाधनों के संबंध पर अपनी राय रखी। माल्थस के सिद्धांत के अनुसार जनसंख्या आर्थिक संसाधनों की अपेक्षा तेजी से बढ़ती है परंतु भूमि की वहन क्षमता जनसंख्या वृद्धि पर लगातार नियंत्रण लगाती रहती है। यह नियंत्रण 'निरोधक' और 'सकारात्मक' नियंत्रणों के रूप में काम करते हैं। इंग्लैंड के मामले में रिंगले और शोफिल्ड ने तर्क दिया कि माल्थस का सकारात्मक नियंत्रण 1700 के बाद बहुत महत्पूर्ण नहीं रह गया। अधिक महत्वपूर्ण मुद्दा शादियों की संख्या और पहली शादी की उम्र जैसे निरोधात्मक नियंत्रण स्थापित करना था। स्वीडेन में हुए हाल के अनुसंधान से यह पता चला है कि 1800 के बाद की अवधि में भी स्थानीय स्तर पर मजदूरी में होने वाले उतार-चढ़ाव का मृत्यु दर से संबंध था। इसमें बताया गया है कि इसमें मौसम की बड़ी निर्णयक भूमिका होती थी क्योंकि इससे अनाज भी कम पैदा होता था और बीमारियों के जरिए मृत्यु दर भी बढ़ जाती थी। परंतु इस समय स्वीडेन की जनसंख्या बढ़ रही थी और वृद्धि की यह प्रवृत्ति घट रही थी। अत: यहां जनसंख्या नियंत्रण का माल्थस सिद्धांत पूर्णतया लागू नहीं होता था। आयरिश मामले से भी माल्थस के जनसंख्या और अर्थव्यवस्था के संबंधों की व्याख्या की कमजोरी का पता चलता है। आयरलैंड में पड़े आकाल के बाद हालांकि जनसंख्या में तेजी से गिरावट आई परंतु इससे लोगों के जीवन स्तर में कोई सुधार नहीं हुआ।

रिंगले और शोफिल्ड ने माल्थस के सिद्धांत का बिलकुल उल्टा पक्ष सामने रखा। उनके अनुसार जनसंख्या की वृद्धि से कष्ट में वृद्धि हो सकती है परंतु बाह्य जीवन स्तर में वृद्धि होने से जीवन का स्तर ऊपर उठ सकता है। इसके परिणामस्वरूप लोग जल्दी शादी करेंगे जिससे जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होगी। पूरे यूरोप में आलू के व्यापक प्रभाव से इन घटनाओं की शुरुआत हुई। इससे खेतों के न्यूनतम आकार को छोटा करने में मदद मिली।

पूर्व-औद्योगीकरण के प्रस्तावकों ने आरंभिक आधुनिक यूरोप में बदलते उत्पादन परिवेश में जनन क्षमता वृद्धि को देखने की कोशिश की। इस विचार के अुनसार घरेलू उत्पादन प्रवृत्ति के कारण एक परिवार श्रम की एक इकाई बन गया। किसानी और शिल्पी अर्थव्यवस्था में शादी करने से पहले कुशलता और पूंजी इकट्ठी करनी होती थी परंतु औद्योगिक युग के आरंभ में अपेक्षाकृत अकुशल कार्यों में लगे परिवारों पर विवाह के लिए इस प्रकार की बंदिशें कम थीं। विवाह करने से उन्हें फायदा ही होता था। परिवार में कमाने वालों की संख्या बढ़ जाती थी। इस परिघटना की झलक उस समय के प्रचलित मुहावरों में मिलती है; जैसे 'भिखमंगों की शादी' और 'सोने को बिस्तर नहीं पर घर में हैं दो-दो चर्खे'। हालांकि इस दृष्टिकोण ने बढ़ती जनसंख्या को उत्पादन प्रक्रिया से जोड़ा परंतु लेसेस्टरशायर में फ्लैन्डर्स और शेशेड को छोड़कर इसे प्राप्त होने वाला परिमाणात्मक समर्थन बहुत कम था।

12.9 जनसंख्या और संसाधन II

पुराने जमाने में यह कहा जाता था कि जनसंख्या बढ़ने से आर्थिक बदलाव आता है। हिक्स के अनुसार 'पिछले दौ सौ वर्षों की औद्योगिक क्रांति से जनसंख्या की तीव्र वृद्धि हुई।' इसी प्रकार नौरमैण्डी पर लिखी अपनी पुस्तक में पियरे शाउनू ने लिखा है कि जनसंख्या के दबाव के अभाव में आर्थिक विकास में प्रगति नहीं आ सकी। पंरतु धीमी गति से जनसंख्या बढ़ने के बावजूद फ्रांसीसी अर्थव्यवस्था का तीव्र विकास हुआ। इससे स्पष्ट है कि जनसंख्या परिवर्तन और आर्थिक परिवर्तन का संबंध इतना सरल नहीं है। ये व्याख्याएं इस तर्क पर आधारित थीं कि जनसंख्या बढ़ने से मांग बढ़ती है। हालांकि प्रति व्यक्ति आर्थिक विकास की अतिरिक्त मांग की पूर्ति के लिए श्रम की न्यूनतम उत्पादकता की प्रवृत्ति को गिरने से बचाने का प्रयास करना होगा; अन्यथा अतिरिक्त श्रम से औसत उत्पादकता तथा औसत मजदूरी में कमी आ जाएगी। अत: जनसंख्या वृद्धि की अपेक्षा निवेश का तेजी से बढ़ना आवश्यक है। ब्रिटेन में हुए अनुसंधान से यह पता चलता है कि इस युग की तकनीकी, वित्तीय और संगठनात्मक बाधाएं इतने छोटे स्तर पर सिमटी हुई थी कि देश की जनसंख्या में हुए परिवर्तन का काम के साथ कोई सीधा संबंध नहीं था।

बड़े पैमाने पर यूरोपीय जनन क्षमता परियोजना के परिणाम का हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं जिसमें आर्थिक विकास और विवाह की उम्र के बीच कोई सीधा संबंध स्थापित नहीं किया जा सका। इसलिए जनन क्षमता की प्रवृत्ति के लिए 'सांस्कृतिक' कारकों की पड़ताल की गई। प्रिंसटन परियोजना की एक सीमा यह थी कि इसमें कुल योग के आधार पर अध्ययन किया गया था। उत्तरी इटली और सिसली में सूक्ष्म स्तरीय

अध्ययन किया गया जिसमें नृजातीय और ऐतिहासिक सूचनाओं को एक साथ रखा गया जिससे मालूम हुआ कि सामाजिक-आर्थिक अंतर का जनन क्षमता में आई गिरावट के समय से निकट का संबंध था। हाल ही में जनसंख्याविदों ने जनसांख्यिकी में 'सांस्कृतिक' महत्व को स्वीकार किया था और उनका मानना था कि इसे गौण खाते में नहीं डाला जाना चाहिए। सांस्कृतिक रीति रिवाजों को अब राजनैतिक, आर्थिक और जनसंख्या परिवर्तन का उत्पाद माना जाता है। एक बार स्वरूप ग्रहण कर लेने के बाद ये अपेक्षाकृत स्वतंत्र हो जाते हैं और आर्थिक परिवर्तन होने पर इनमें काफी लचीलापन आ जाता है।

ऊपर दी गई व्याख्याओं को देखने से यह स्पष्ट है कि इसमें लगातार परिवर्तन आते रहे हैं। सबसे पहले माल्थस ने प्राकृतिक नियम पर आधारित सिद्धांत बनाया; फिर आर्थिक परिवर्तनों को नकारा गया और अब राजनैतिक तथा राजनैतिक-आर्थिक प्रक्रियाओं को जनसंख्या संबंधी परिवर्तन के लिए आवश्यक समझा जा रहा है।

12.10 19वीं शताब्दी का अंत और उसके बाद

अब हम यूरोप के जनसांख्यिकी इतिहास के दूसरे युग पर विचार करने जा रहे हैं। 19वीं शताब्दी के अंत में इस युग की शुरुआत हुई। इस दौरान राष्ट्रीय जनन क्षमता स्तर ह्रासोन्मुख हुई। 1870 में जन्म दर की अनुमानित वार्षिक औसत 35 की थी जो 1930 में घटकर 20 हो गई। पश्चिमी यूरोप में सर्वत्र यह परिवर्तन देखने को मिलता है। केवल फ्रांस इसका अपवाद था। शेष पश्चिम यूरोप के सन्दर्भ में कम से कम एक शताब्दी पहले से इसकी राष्ट्रीय जनन क्षमता में गिरावट आ रही थी। फ्रांस के किसान पूरी उन्नीसवीं शताब्दी में जमीन से चिपके रहे और सर्वहाराकरण की दर अपेक्षाकृत धीमी रही। परिणामस्वरूप प्राचीन युग की भूमि आधारित व्यवस्था के कारण गांव में रहने वाले लोगों की जनन क्षमता नियंत्रित रही; केवल इंग्लैंड इसका अपवाद था। इसके अलावा फ्रांस के किसानों ने अन्य देशों के किसानों और सर्वहाराओं से काफी पहले वैवाहिक जीवन में जन्म नियंत्रण विधियों का उपयोग करना शुरू कर दिया था। 1870 से लेकर 1900 तक फ्रांस की जनन क्षमता में 22 प्रतिशत की बड़ी कमी आई जबकि अन्य देशों में यह गिरावट धीरे-धीरे हुई। प्रिंसटन ग्रूप ने पश्चिमी यूरोप में जनन क्षमता में गिरावट का समय इस प्रकार तय किया है:

फ्रांस	1800
बेल्जियम	1882
स्वीटजरलैंड	1885
जर्मनी	1890
इंग्लैंड और वेल्स	1892
स्वीडेन	1892
स्कॉटलैंड	1894
आयरलैंड	1929
नीदरलैंड	1897
डेनमार्क	1900
नौर्वे	1904
ऑस्ट्रिया	1908
फिनलैंड	1910
इटली	1911
स्पेन	1918

इस शताब्दी के प्रथम तीन दशकों में पूर्वी यूरोप में जनन क्षमता अपेक्षाकृत ज्यादा थी। परंतु कोले, के अनुसार बुल्गारिया, रोमानिया, पोलैंड और रूस में प्रथम विश्व युद्ध के पहले ही वैवाहिक जनन क्षमता में कमी आने लगी थी। 1930 से सोवियत संघ, पोलैंड और रोमानिया में जनन क्षमता में गिरावट आई। सोवियत संघ

और रोमानिया में जनन क्षमता दर सबसे तेज थी। 1960 के दशक के अंत में अल्बानिया और आयरलैंड के अतिरिक्त यूरोप के सभी देशों के जन्म दर में कमी आई। इस दौरान सकल प्रजनन दर और कुल प्रजनन दर में भी कमी आई। 1920 के दशक में सभी देशों में कुल प्रजनन दर एक से अधिक थी। मंदी के दौरान लगभग पांच देशों ने कुल प्रजनन दर एक बताई थी ओर लगभग 12 देशों ने अपना सकल प्रजनन दर एक से ज्यादा बताया था। 1937 में संभवत: प्रतिकूल राजनैतिक परिस्थिति के कारण आस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया में भी प्रजनन दर में कमी आई। द्वितीय विश्व युद्धरत देशों के प्रजनन दर में भी कमी आई होगी पर आंकड़े के अभाव के कारण ठीक ठीक इसका आकलन करना मुश्किल है। युद्ध के बाद जनन दर में 1950 के दशक के आरंभ तक तेजी आई और उसके बाद फिर गिरावट का दौर शुरू हुआ। 1960 के दशक में पूर्वी यूरोप में प्रजनन दर में कमी आई और पश्चिमी देशों जैसे यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, नौर्वे और आयरलैंड में वृद्धि दर्ज की गई। 1960 के दशक के अन्त तक यूरोप के लगभग सभी देशों में जनन क्षमता में कमी आई।

12.10.1 मृत्यु दर

शताब्दी के आरंभ में दक्षिणी और पूर्वी यूरोप में मृत्यु दर काफी ऊंची थी (20 से अधिक) और उत्तरी पश्चिम में कम थी (13 से कम)। यूरोप के अन्य क्षेत्रों में मृत्यु की दर इन दोनों के बीच थी। 20वीं शताब्दी के दौरान मृत्यु दर में गिरावट आती गई। जैसा कि पहले हुआ था शिशु मृत्यु दर में कमी आने से आम मृत्यु दर में कमी आई। जिन देशों में मृत्यु दर में गिरावट देर से आई वहां इसमें ज्यादा तीव्रता थी। 1960 के दशक के अंत तक दक्षिण पूर्व और सोवियत संघ में मृत्यु दर सबसे कम थी। 1960 तक सोवियत संघ चिकित्सक के अनुपात में सबसे कम जनसंख्या और अस्पताल में प्रति बिस्तर तथा जनसंख्या के अनुपात की दृष्टि से यह यूरोप के प्रथम देश के रूप में उभरा। जनसंख्या की परिवर्तित आयु संरचना द्वारा भी मृत्यु दर में परिवर्तन आया। शिशु मृत्यु दर में कमी आने से लोगों की आयु बढ़ी, स्त्री पुरुष की आयु में फर्क रहा। महिलाओं की उम्र ज्यादा होती थी। 1960 के दशक के अन्त तक यूरोप के देशों में लोगों की औसत आयु में बहुत फर्क नहीं रह गया था।

12.10.2 आयु संरचना

युद्ध में लोगों के मारे जाने और जन्म दर में कमी आने से दीर्घवधि में यूरोपीय जनसंख्या की आयु संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए। इन दो कारकों के फलस्वरूप बच्चों का अनुपात कम हुआ और जनसंख्या में वयस्कों का अनुपात बढ़ा। जनन क्षमता में कमी आने और आयु सीमा में बढ़ोत्तरी होने या मृत्यु दर में कमी आने से वयस्क लोगों की संख्या ज्यादा हो गई। इन सब समानताओं के बावजूद यूरोपीय जनसंख्या में उम्र और स्त्री पुरुष संख्या की विभिन्नता मौजूद थी। 1950 के दशक में फ्रांस में 65 वर्ष से अधिक आयु के लोगों का प्रतिशत 11.8 था जबकि यह यूगोस्लाविया में 6 था। फ्रांस, इंग्लैंड, वेल्स, आस्ट्रिया, डेनमार्क और स्वीडेन में बुजुर्ग लोगों का अनुपात ज्यादा था जबकि सोवियत रूस, पोलैंड, हंगरी, नीदरलैंड, इटली और स्पेन में इनका अनुपात कम था।

12.10.3 युद्ध और देशांतरण

20वीं शताब्दी में यूरोप में युद्ध और देशांतरण से जनसंख्या में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। हालांकि दो विश्वयुद्धों के दौरान यूरोप प्राकृतिक आपदाओं से मुक्त रहा। परंतु जनसंख्या पर इसका बुरा असर पड़ा। प्रथम विश्व युद्ध में लोगों की मृत्यु के बाद चारों ओर इनफ्लूएंजा महामारी के रूप में फैल गई। युद्ध के कारण युद्धरत देशों में उम्र – यौन अनुपात में असंतुलन आ गया। देर से विवाह होने लगे और बच्चे भी कम पैदा हुए। फ्रांस, बेल्जियम, रूस, सर्बिया, जर्मनी, बुलगारिया और आस्ट्रिया पर प्रथम विश्व युद्ध का सबसे बुरा प्रभाव पड़ा। द्वितीय विश्व युद्ध के कारण जनसंख्या का नुकसान इस प्रकार हुआ :

फ्रांस, नीदरलैंड, बेल्जियम और आस्ट्रिया: 1940 की जनसंख्या का 1.5 प्रतिशत

जर्मनी: 6.5 प्रतिशत से 7 प्रतिशत

दक्षिणी यूरोप: 3.1 से 3.4 प्रतिशत

उत्तरी यूरोप : .8 प्रतिशत

पूर्वी यूरोप : 8.9 प्रतिशत

सोवियत संघ 8.7 से 12.8 प्रतिशत

युद्ध में हुए नुकसान के कारण पूर्वी यूरोप और सोवियत संघ में इन वर्षों में निषेधात्मक वृद्धि हुई।

इन वर्षों में देशांतरण होने के कारण भी यूरोप की जनसंख्या में वृद्धि न हो सकी।

परम्परागत रूप से यूरोप से लोग बाहर जाते रहे हैं। यह सिलसिला 1901 से 1915 तक चलता रहा। इस दौरान यूरोप से काफी लोग बाहर गए। 1901-5, 1906-10, 1911-15 में प्रतिवर्ष औसत देशांतरण क्रमश: 10 लाख, 14 लाख और 13 लाख था।

देशांतरण के कारण एक दशक में हुआ प्रतिशत परिवर्तन

	1920-30	1930-39	1950-60	1960-66
पश्चिम यूरोप	- 1.7	+0.2	+3.0	+3.0
दक्षिणी यूरोप	- 1.0	-0.7	-3.1	-1.5
पूर्वी यूरोप	-1.8	-0.1	-2.8	-0.9
उत्तरी यूरोप	-1.9	+0.4	-0.6	+0.3

(*स्रोत: कार्लो एम. सिपोला, **द फौनटाना इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ यूरोप,** वौल्यूम 5 (1), पृष्ठ 13)

इस अवधि में दक्षिण और पूर्वी यूरोप से लोग बाहर गए और उत्तरी यूरोप में लोग बाहर भी गए और वहां बाहर से लोग आए भी जबकि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पश्चिमी यूरोप से लोगों का बाहर निकलना कम हुआ और वहां बाहर से आने वालों की संख्या बढ़ गई।

हालांकि देश छोड़कर बाहर जाने का मुख्य कारण आर्थिक होता था परंतु राजनैतिक परिवर्तनों के कारण भी लोग एक जगह से जाकर दूसरी जगह बस जाते हैं। रूस और जापान में हुए गृह युद्धों और जर्मनी में नाजियों के सत्ता में आने के कारण बड़े पैमाने पर देशांतरण हुआ। प्रथम विश्व युद्ध के पहले एक देश से दूसरे देश मजदूरों का आना जाना लगा रहता था और इसमें कोई रुकावट नहीं थी। हालांकि युद्ध के बाद यूरोप में दबाव कारक में कोई बहुत अंतर नहीं आया परंतु अमेरिका के नियंत्रण कानून के कारण देशांतरण में कमी आई। 1921 के कोटा कानून और 1924 के आप्रवास नियंत्रण अधिनियम के कारण देशांतरित लोगों की संख्या में तेजी से कमी आई। यूरोप और अमेरिका में आई मंदी और बेरोजगारी की समस्या के कारण भी मजदूरों की मांग में भारी कमी आई। मंदी के बाद भी स्थिति बहुत नहीं सुधरी और इससे देशांतरण को प्रोत्साहन नहीं मिला। 1930 के दशक में अमेरिका में श्रम की मांग और यूरोप से उनकी आपूर्ति का संतुलन टूट गया।

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन राजनीति के कारण जर्मनी से यहूदियों, जर्मन अल्पसंख्यकों और राजनैतिक कैदियों को जबरन और मजबूरन देश छोड़ना पड़ा। युद्ध के बाद पुनर्निर्माण के दौर में और 1950 के दशक के अंत और 60 के दशक के आरंभ में हुई तीव्र आर्थिक वृद्धि के कारण इस मांग की आपूर्ति पहले पूर्वी यूरोप और फिर भूमध्यसागरीय देशों से हुई। तुर्की से काफी मजदूर जर्मनी गए।

12.10.4 शहरीकरण

इस शताब्दी के आरंभ में यूरोप में लगभग 70 प्रतिशत लोग गांवों में रहते थे। यूनाइटेड किंगडम का सबसे ज्यादा शहरीकरण हुआ था जहां 77 प्रतिशत लोग शहरों में रहते थे। जर्मनी में 56 प्रतिशत लोग शहरों में रहते थे। अन्य सभी देशों में आधे से कम ही लोग शहरों में रहते थे। फ्रांस में 41 प्रतिशत, डेनमार्क में 38.2 प्रतिशत, स्वीडेन में 22 प्रतिशत, बुल्गारिया में 19.8 प्रतिशत, रूस में 15 प्रतिशत और फिनलैंड में 10.9 प्रतिशत लोग शहरों में रहते थे। बीसवीं शताब्दी में शहरीकरण की लहर उत्तर-पश्चिम से दक्षिण और पूर्व की ओर चली। लोगों के बाहर से आकर बसने से शहरों का विकास हुआ। गांव से शहरों की ओर प्रयाण का कारण कृषि की निम्न उत्पादकता नहीं थी बल्कि अर्थव्यवस्था में आए फैलाव और विविधता के कारण ऐसा हुआ। कारखानों, उद्योग धंधों, व्यापार, बैंक और लोक प्रशासन के कारण आधुनिक शहरों का विकास हुआ।

शहरी और ग्रामीण जनसंख्या वितरण की प्रवृत्ति

	यूरोप				सोवियत संघ			
	1920	1940	1960	1970	1920	1940	1960	1970
शहरी	150	200	245	292	22	63	104	136
ग्रामीण	175	178	178	170	114	131	109	106
शहरी प्रतिशत	46	53	58	63	16	33	49	56

(*स्रोत: कार्लो एम. सिपोला, **द फौनटाना इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ यूरोप**, वौल्यूम 5 (1), पृष्ठ 74)

बोध प्रश्न 2

1) मात्थस के 'निरोधक' नियंत्रण से आप क्या समझते हैं ?

....

....

....

....

....

2) आरंभिक औद्योगीकरण के प्रतिपादकों के अनुसार 'भिखारी की शादी' का क्या मतलब है ?

....

....

....

....

....

3) जनसांख्यिकी परिवर्तन और आर्थिक विकास का संबंध स्थापित करने वाले अध्ययनों (जैसे हिक्स) की सीमाएं क्या है ?

....

....

....

....

....

4) यूरोप में 20वीं शताब्दी में जनसंख्या में होने वाले परिवर्तनों में युद्धों और देशांतरण की क्या भूमिका थी ?

....

....

....

....

....

12.11 सारांश

इस इकाई को पढ़कर आपने निम्नलिखित जानकारियां प्राप्त की:

- यूरोप में हुए जनसांख्यिकी बदलावों को इतिहासकारों ने भिन्न-भिन्न दृष्टियों से देखा है।
- जनसांख्यिकी इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए गिरजाघर के रजिस्टरों और विभिन्न प्रकार की जनसंख्या गणनाओं जैसे स्रोतों का उपयोग किया गया।
- ऐतिहासिक जनसांख्यिकीवेत्ताओं ने यूरोपीय समाजों में अगल-अलग समयों में जनसंख्या परिवर्तन के लिए जनन क्षमता, विवाह या मृत्यु दर जैसे कारकों पर विचार किया।
- जनसंख्या और आर्थिक वृद्धि के बीच संबंध स्थापित करने में बहुत सावधानी रखने की आवश्यकता है।

12.12 शब्दावली

जनन क्षमता : जनसंख्या की प्रजनन क्षमता से संबंधित

मृत्यु दर : जनसंख्या अध्ययनों में किसी जनसंख्या की मृत्यु दर

पैरिश रजिस्टर : चर्च के रजिस्टर जिसमें जन्म और मृत्यु दर्ज की जाती थी

12.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 12.2। आप इसमें बता सकते हैं कि इस सिद्धांत के अनुसार आदिम से विकसित समाजों की ओर सीधा और सरल विकास हुआ है।
2) देखिए भाग 12.3
3) देखिए भाग 12.6 आप दो कारकों की चर्चा कर सकते हैं (i) प्रथम विवाह के समय उम्र और (ii) विवाहितों का अनुपात
4) देखिए भाग 12.7

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 12.8 माल्थस जनसंख्या का संबंध भूमि की वहन क्षमता से जोड़ते हैं।
2) देखिए भाग 12.8 इसका संबंध परिवार का श्रम की इकाई बनने की संभावना से है।
3) देखिए भाग 12.9
4) देखिए उपभाग 12.10.3